

प्रकाशनार्थ

20 जून, 2022 गोरखपुर।

मानवता के विकास का आधार है योग- प्रो. द्वारिकानाथ

योग हमारे भारतीय जीवन की आधारशिला है। समाज में योग के बारे में लोगों में कुछ भ्रान्तियां भी हैं, कुछ लोग यह मानते हैं कि योग केवल व्यायाम है, जबकि योग व्यायाम है ही नहीं, अपितु यह एक आध्यात्मिक विधा है। जिसके माध्यम से आत्मा से परमात्मा की प्राप्ति का विचार किया गया है। व्यायाम करने से व्यक्ति का समूचा अंग प्रभावित नहीं होता है, किंतु योग करने से समूचा अंग प्रभावित होता है। व्यायाम करने से शरीर में विषैले पदार्थ उत्पन्न होते हैं जबकि योग करने से शरीर के विषैले पदार्थ नष्ट होते हैं, इसलिए योग व व्यायाम में बहुत अंतर है। योगाग्नि रूपी शरीर को प्राप्त करने के बाद शरीर में स्थित सभी प्रकार के रोग व दोष भस्म हो जाते हैं। मानवता के लिए जो प्रमुख तीन प्रकार के दुख होते हैं इन तीनों दुखों से निवृत्ति दिलाने का साधन योग है। यही नहीं योग हमारी आजीविका का साधन होने के साथ ही भौतिक आवश्यकताओं की पूर्ति का भी साधन है। यह हमारे जीवन से पूरी तरह से जुड़ा हुआ है। हमारे जीवन को उच्चतर बनाने का यह एक सशक्त साधन भी है। योग हमें हमारी स्वयं की क्षमता से परिचय कराता है। स्वयं से स्वयं का निदान तलाशने का मार्ग भी बताता है। इसलिए हम यह कह सकते हैं कि योग मानवता के विकास का आधार है।

उक्त बातें श्री गोरखनाथ मंदिर के दिग्विजय नाथ स्मृति सभागार में आजादी के अमृत महोत्सव के अंतर्गत अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस के अवसर पर आयोजित साप्ताहिक योग शिविर एवं शैक्षिक कार्यशाला के छठे दिन 'मानवता के विकास में योग- गुरु गोरखनाथ के संदर्भ में' इस विषय पर बतौर मुख्य वक्ता दीनदयाल

उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय के दर्शनशास्त्र विभाग के पूर्व अध्यक्ष प्रो. द्वारिकानाथ ने कही।

उन्होंने कहा कि महायोगी गुरु गोरखनाथ जी ने न केवल भारतीय समाज अपितु संपूर्ण मानव सभ्यता को योग रूपी जो अमरदान दिया वह अतुलनीय है। गोरखनाथ जी का संपूर्ण जीवन हीं मानवता के लिए समर्पित रहा। भारत की समूची संत परंपरा गोरखनाथ जी की ऋणी है। जैसे हम कह सकते हैं कि बुद्ध नहीं होते तो ध्यान की आधारशिला उखड़ गई होती, कृष्ण नहीं होते तो प्रेम की आधारशिला उखड़ गई होती, उसी तरह हम कह सकते हैं कि गोरखनाथ जी नहीं होते तो परम तत्व को प्राप्त करने के साधन से यह सर्व समाज वंचित रहा होता। उन्होंने आत्मा परमात्मा के मिलन के अनेक साधन बताए।

उन्होंने कहा कि योग किसी विशेष जीवन पद्धति या विशेष आश्रम के लिए नहीं है अपितु गोरखनाथ जी के अनुसार योग संपूर्ण मानव जाति का सर्वोच्च ज्ञान है। इसके माध्यम से समाज का प्रत्येक वर्ग ईश्वर की प्राप्ति सहजता से कर सकता है। योग विज्ञान संपूर्ण मानव जाति की सहायता करने में समर्थ होता है।

योग के वैश्विक महत्व पर प्रकाश डालते हुए उन्होंने कहा कि आज अमेरिका जैसे देश में लगभग चौरानबे प्रतिशत लोग योग को अपने जीवन का अंग बना लिए हैं। इसके माध्यम से अपने जीवन को निरोगी व सुखी बना रहे हैं। वहाँ लगभग पचास हजार योग शिक्षण संस्थान खुल गये हैं। माननीय प्रधानमंत्री जी ने अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस पर इस वर्ष जो थीम दिया है वह है मानवता के लिए योग। यह थीम पूर्णतः उपयुक्त और प्रासंगिक है।

संगोष्ठी में बतौर सारस्वत अतिथि वरिष्ठ योगाचार्य व योग प्रशिक्षक उपेंद्र पाठक ने कहा कि योग मनुष्य को अष्ट सिद्धियों और नव निधियों को देने वाला है। हनुमान जी भी इसी योग के बल पर महाबली व महाज्ञानी बने थे। उन्होंने कहा कि जैसे हनुमान को रुद्रावतार कहा जाता है वैसे महायोगी गोरखनाथ जी भी

शिवावतार बताए गये हैं। वह योगीश्वर थे और मानव सभ्यता के कल्याण के लिए अवतरित हुए थे।

संगोष्ठी की अध्यक्षता करते हुए गोरखनाथ मंदिर के प्रधान पुजारी योगी कमलनाथ ने कहा कि गुरु गोरखनाथ ने ऐसे काल में योग को समाज में प्रचारित-प्रसारित किया, जिस काल में मानव सभ्यता संकट में थी। समाज विकृतियों का शिकार हो गया था और दिग्भ्रमित हो गया था। योग के सर्व सुलभ व सर्वग्राही पद्धति के द्वारा गुरु गोरखनाथ ने मानव विकास की एक नई विधा समाज को दिया।

संगोष्ठी का संचालन व विषय की प्रास्ताविकी श्री गोरक्षनाथ संस्कृत विद्यापीठ के आचार्य बृजेश मणि मिश्र ने तथा आभार ज्ञापन गुरु गोरक्षनाथ योग संस्थान के योगाचार्य योगी सोमनाथ में किया।

कार्यक्रम का प्रारंभ पूर्व ब्रह्मलीन महंतद्वय के चित्र पर पुष्पांजलि व विद्यापीठ के छात्र गोविन्द के वैदिक मंगलाचरण से हुआ।

कार्यक्रम में प्रमुख रूप से डॉ॰ दीनानाथ राय, डॉ॰ अरविंद कुमार चतुर्वेदी, डॉ॰ रोहित कुमार मिश्र, डॉ॰ दिग्विजय शुक्ल, डॉ॰ अभिषेक पांडेय, डॉ॰ प्रांगेश मिश्र, ओम प्रकाश त्रिपाठी, हृदय नारायण शुक्ल, दीप नारायण, नित्यानंद तिवारी, शुभम मिश्र, शशांक पांडेय आदि उपस्थित रहे।